वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मार्च 2023

- अपने आत्मा की रक्षा और उन्नति...
- हृदय परिवर्तन
- मैं पूजनीय भगवान के चरणों में आ गया
- देव वाणी
- पति पत्नी यज्ञ साधन
- केसूपुर स्कूल में माता पिता दिवस
- निज के साधन में
- गहरी व्याकुलता से उठे सवाल
- संगरूर में विशेष सत्संग

इस अंक में

इस अंक में हम अपने पाठकों के लिए श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी का लेख दे रहे है, जो कि आत्मिक जगत में आत्म बोधी कर्मचारी थे, जिनके लेखों को पढ़ कर कनल जी जैसे महान दार्शनिक अश अश कर उठते थे। लेख का विषय है : अपने आत्मा की रक्षा और उन्नति का सच्चा फ़िकर करो, वरना बाद में बहुत ज़्यादा पछताओंगे।

हृदय परिवर्तन की दो घटनाएं जो कि धर्म विकासालय की घटनाएं हैं वो भी इस अंक का भाग हैं, जो भगवान देवात्मा के देव प्रभावों की जीती जागती शहादतें हैं।

कनल जी की जीवनी MY STORY देव समाज के लोगों के लिए अमृत स्रोत है, उसके हिंदी अनुवाद के दो पाठ हम यहां दर्ज करते हैं, ताकि इन दो लेखों से ही इस पुस्तक की श्रेष्ठता पाठकों के सामने आ जावे।

देव वाणी भगवान के दुख तकलीफों को प्रगट करती है कि किस प्रकार वो किसी अस्तित्त्व की थोड़ी सी हानि देख कर भी तड़प उठते थे। और हम अपनी वा दूसरों की हानि करके और देख कर भी कठोर रहते हैं।

सूचना : देव समाज के आगामी त्यौहार इस प्रकार हैं :

- 8 मार्च 2023 ई. : पति पत्नी के संबंध में
- 23 मार्च 2023 ई उद्भिद जगत के संबंध में

पाठ और विचार के विशेष दिन हैं, पाठक इन त्यौहारों को पूजनीय देव शास्त्र खण्ड चार में दिए आदेशों के अनुसार मनाएं। लेख और उपदेश खण्ड दो में से इस संबंध में भगवान के उपदेशों को पढ़ें। पुष्प और पुष्प अनुराग पुस्तक जो देवात्मा रचित है, कल्याणकारी सिद्ध हो सकती है।

गौतम गोनियाना

शोक समाचार

शोक है कि हमारे माननीय साथी सेवक जगजीत सिंह जी लुधियाना की नेक, सहायक और साथी धर्म पत्नी का 27 फरवरी को देहान्त हो गया है। यह उनके लिए इस उम्र में गहरा सदमा है। हम कामना करते हैं कि उन्हें और उनके परिवार को धैर्य मिले और उनकी धर्म पत्नी को शान्ति मिले और परलोक में उनकी अधिक से अधिक सहायता हो।

- आपके प्रति हमदर्दी प्रगट करते हुए, बलदेव सिंह

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : - श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 3
मार्च 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

अपने आत्मा की रक्षा और उन्नति का सच्चा फ़िकर करो, वरना बाद में बहुत ज़्यादा पछताओगे

लेखक : उच्च लोकवासी श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी कर्मचारी देव समाज

अगर कोई जन साहिबे जायदाद होकर अर्थात लाखों और करोड़ों रुपये नकदी और जायदाद की सूरत में अपने माता पिता से विरसे में हासिल करके या उनकी तरफ से और किसी तरह से लाभ करके या किसी व्यापार आदि में नफ़ा के तौर पर प्राप्त करके उस नकदी या जायदाद की उचित रक्षा या हिफ़ाज़त नहीं करता। उससे उचित तौर पर कोई आमदनी पैदा नहीं करता बल्कि अपनी लापरवाही से या अपनी गैर जिम्मेवारी से या अपनी फजूल खर्ची से उसे बर्बाद करता चला जाता है तो धीरे धीरे जब वह अपनी सारी नकदी वा अपनी सारी जायदाद को अपने हाथों से खो बैठेगा और कंगाल होकर अपनी और अपने परिवार की उचित ज़रूरतें पूरी करने से भी लाचार हो जायेगा या अपने ऊपर औरों के कर्ज़े का बोझ रखकर उसे अदा करने को कोई सामर्थ्य नहीं रखेगा तब वह जिस क़दर दुखी होगा! अपनी ऐसी बुरी अवस्था पर जितना पछतायेगा और अपने बुरे कर्मों के लिए जिस तरह पर रोयेगा और अपनी किस्मत को कोसेगा, उसका वही जन ठीक अनुमान कर सकते हैं कि जिन्हें दुर्भाग्य से कभी ऐसे हालात में से गुज़रना पड़ा हो। हमें जाति तौर पर कितने जनों का ऐसा ठीक हाल मालूम है कि जिनमें से एक एक जन ने एक एक विवाह पर बहुत सा खर्च करके या मकानात बनाने में अपनी हैसीयत से ज़्यादा रुपये लगाकर या अपने कारोबार में अटकल पच्चू चलकर और इस प्रकार अपने रुपये को बर्बाद करके या अपनी जायदाद की उचित रक्षा न करके या तरह तरह से फ़ज़ूल खर्ची करके अपना सब रुपया और अपनी सब जायदाद बर्बाद कर ली है और वह नंग मलंग हो गया है ऐसी अवस्था में वह इस प्रकार का प्रकाश करता सुना गया है कि उसे रात को नींद नहीं आती। वह बहुत दुखी अवस्था में करवटें बदलता रहता है या रात को तारे गिनता रहता है। उसे दस्त लग जाते हैं। उसका खाना खाने को जी नहीं करता। उसका कहीं दिल नहीं लगता। उसके अन्दर ऐसी

आग लगी रहती है कि जिसको उस के लिए सहन करना बहुत कठिन होता है। पर एक एक जन अपनी सब जायदाद तबाह हो जाने के बाद जब अपनी उचित ज़रूरतें पूरी करने से लाचार हो गया है या उसके कर्ज ख्वाहों ने उससे अपने रुपये का सख़्त तक़ाजा करना शुरू किया है, तब उसने इस अज़ाब को बर्दाश्त करने के नाकाबिल होकर ज़हर का प्याला पी लिया है। और इस प्रकार अपने हाथों अपना खून कर लिया है। एक जन जिस का नाम मिस्टर करागिर था, वह व्यापार द्वारा करोड़ों रुपयों का मालिक बन गया। यहां तक कि वह स्वीडन में दियासिलाई के व्यापार का बादशाह कहलाता था और उसका यह हाल हो गया था कि वह धीरे धीरे सारी दुनिया की दियासिलाई के व्यापार को अपने क़बज़े में करने के मनसूबे बान्धता रहता था। इसके लिए उसने तीन करोड़ पौंड का कर्ज़ा भी लिया। अन्त में वह ऐसा अटकल पच्चू चलने लगा कि उसका सारा कारोबार तबाह हो गया और लोगों ने अपने कर्ज़े की सख्त मांग शुरू की और वह उस मांग को पूरा न कर सका। इस हालत में वह अमरीका चला गया। उसका ख्याल था कि वह अपने बारे न केवल लोगों के शकूक दूर करके बल्कि उन से और रुपया भी कर्ज़ ले सकेगा। लेकिन उसका जादू उतर चुका था। उसका प्रभाव नष्ट हो चुका था। इसलिए वह बहुत निराश और मायूसी की हालत में अमरीका से वापिस स्वीडन आया स्वीडन में आने पर वहां के बैंकों ने अपने रुपये की मांग शुरू की। वह हैरान हो गया कि करे तो क्या करे। उसने अपनी माली हालत सुधारने के लिए कई तरह की बेईमानियां कीं। कई झूठे ऐलान निकाले। लोगों को तरह तरह से धोखा देने की कोशिश की। मगर अब लोग न केवल उसके धोखे में नहीं आए बल्कि उल्टा कर्ज़ख्वाहों ने अपने रुपये की मांग शुरू कर दी और वह जन हद दर्जे का मजबूर और लाचार हो गया। आखिरकार 12 मार्च 1932 ई. को जब सब हालात आदि देखने के बाद वह इस नतीजे पर पहुंचा कि अब उसके लिए इस गोरख धंधे से निकलना सख़्त मुश्किल है तब इन हालात में उसने इसके अतिरिक्त और कोई चारा न देखा कि वह अपनी जिन्दगी का आप ख़ात्मा करे। चुनांचे उसने पिस्तौल अपने दिल के निकट छाती में मारा और ठंडा हो गया। ओह! अपनी रुपये और अपनी जायदाद के विषय में अपनी जिम्मेवारी को ठीक तरह पूरा न करने और इससे बढ़कर इस पहलू में तरह तरह से ग़लत जाने का कैसा दु:खदाई और कैसा बुरा अंजाम!

पाठकगण! बेशक अपने रुपये और अपनी जायदाद की उचित रक्षा और उन्नति का ठीक प्रबन्ध न करने और इस पहलू में अनाप शनाप चलने का भी उपरोक्त प्रकार का बहुत भयानक घाटा है और इसके कारण एक एक मनुष्य को बहुत बड़े दु:खों में फंस जाना पड़ता है यहां तक कि कई अवस्थाओं में अपनी अकाल मृत्यु के लिए विवश होना पड़ता है। लेकिन इसकी तुलना में जो लोग अपने माता पिता से धर्म की पूंजी प्राप्त करके और फिर इस पूंजी की रक्षा और उन्नति का सच्चा बोध देने वाले सच्चे धर्म दाता

भगवान देवात्मा की शरण में आने का महा सौभाग्य पा कर भी अपने जीवन की निहायत बढ़िया दौलत की उचित रक्षा और उन्नति का कोई उपाय नहीं करते बल्कि अपने आत्मा को नष्ट करने वाली नाना नीच शक्तियों के अपने आपको हवाले करके अपने आत्मा की आत्म पूंजी का नाश करते रहते हैं, उन जैसा बदनसीब और कोई जन भी नहीं हो सकता। समय आने पर वह जिस प्रकार अपने कर्मों को रोते हैं या रोयेंगे वह जिस प्रकार अपने शरीर को महा रोगी बनाकर जैसी बुरी तरह आहोज़ारी करते और तड़पते हैं, वह जिस प्रकार इस दुनिया को छोड़ने पर अधम लोक या किसी नर्क लोक में जाकर जैसे बुरी तरह सड़ते और गलते हैं, उसका ठीक प्रकाश शब्दों में करना बहुत कठिन है, वह सब कुछ देखने और अनुभव करने से ही सम्बन्ध रखता है। माननीय पाठकगण! धन और जायदाद के विचार से बहुत घाटा उठाने वाले जन पर कोई और जन मेहरबानी करके उसे फिर धनवान बना सकता है और कई अवस्थाओं में वह कंगाल जन स्वयं भी धन कमाने के योग्य हो सकता है। इसके अतिरिक्त वह मरते समय धन के विचार से गरीबी की अवस्था में मर कर भी यदि वह अपने दिल की अवस्था अच्छी रखता है तो वह अपने आप को बहुत सौभाग्यवान बोध कर सकता है और अपने धन की बहुत बड़ी हानि को असानी से भूल सकता है और अपने अच्छे जीवन के कारण किसी उच्च लोक में जाकर उसकी बेबहा बरकतों से मालामाल हो सकता है। और किसी उच्च लोक में पहुंचने पर यथावश्यक फिर सूक्ष्म रुपये, धन आदि भी प्राप्त कर सकता है। लेकिन अगर किसी जन ने अपने आत्मिक जीवन के विचार से अपने आपको तबाह कर लिया हो, अपने आत्मा की सारी अच्छी योग्यता को नष्ट कर लिया हो और अपने आप को केवल नीच अनुरागों और नीच घृणाओं का ही दास बना लिया हो और अपने आत्मा का कुछ भी सच्चा बोध हासिल न किया हो और वह अपने सच्चे मोक्ष और विकास के साधनों का कुछ भी सच्चा आकांक्षी न बना हो और उसने धर्मदाता देवात्मा के साथ अपना जीवन्त और उन्नतशील सम्बन्ध कुछ भी स्थापन न किया हो, वह जिस प्रकार की महा हानिकारक मुसीबतों का घर बन जाता है, उसकी तुलना और किसी प्रकार के दुखिया जन के साथ कुछ भी नहीं हो सकती।

तब माननीय पाठकगण! नितान्त आवश्यकता है कि अगर आप अब तक अपनी आत्मिक उच्च पूंजी की सच्ची रक्षा और उन्नति का कोई भी सच्चा बोध नहीं पा सकते हैं, और इसलिए उसकी सच्ची रक्षा और उन्नति का कोई भी सच्चा उपाय नहीं करते, तो आपको अपनी ऐसी हालत से निकलने का शीघ्र से शीघ्र फिक्र करना चाहिए। इस पहलू में अगर आपका उचित समय हाथ से निकल गया तो फिर आपके लिए रोने धोने और रो धो कर अपना पूर्ण नाश करने के अतिरिक्त और कोई रास्ता बाकी न रहेगा। तब आपका अत्यन्त आवश्यक कर्तव्य है कि आपको नेचर के करोड़ों वर्षों के विकासकारी सिलसिले में जो मनुष्य जन्म मिला है उसे आप यूं ही बरबाद न करें बल्कि भगवान देवात्मा की

रहनुमाई में चलने का संग्राम करके उसे अधिक से अधिक सफल और सार्थक बनाएं और ऐसा करके जहां आप इस दुनिया में महा कल्याणकारी दृष्टांत छोड़ने वाले बनें वहां अपने उच्च जीवन के कारण मरने के बाद किसी उच्च लोक में जाने और उसकी बेबहा उच्च बरकतों से मालामाल होने के योग्य बनें।

ऐसी राह पर चलकर आपका पाक सुख और आनन्द भी बहुत बढ़ जाएगा। आपकी सच्ची इज्ज़त भी ज्यादा हो जायेगी। आपको बहुत से रक्षाकारी और हितकारी सम्बन्धी भी हासिल हो जायेंगे और आप सचमुच अपने आपको महा सौभाग्यवान और कर्तार्थ बोध करेंगे। हमारी यह हृदयगत कामना है कि जिन जनों को अपने माता पिता से धर्म की कोई पूंजी मिली है और उसके बाद उन्हें धर्म दाता की शरण भी मिल गई है वह अपने इस उच्च अधिकार को अधिक से अधिक सफल कर सकें।

हृदय परिवर्तन

1. बिगड़े दिलों का सुधार

एक नौजवान के पिता उसके सलूकों से तंग आकर उसको देव समाज की उच्च संगत में छोड़ गए थे, क्योंकि वह जानते थे कि देव समाज की उच्च संगत में बिगड़े दिलों को सुधारने का काम किया जाता है। देव समाज विकासालय की उच्च संगत का उस नौजवान पर यह असर हुआ कि उसने न केवल कई जनों की चुराई हुई चीज़ें वापिस कीं, बल्कि अपने माता - पिता आदि के संबंध में अपने बुरे बर्ताव को सामने लाकर उन्हें अफ़सोस हुआ। चुनांचे वह नौजवान लिखते हैं : -

मैं अपने माता - पिता का नाना प्रकार से अपमान करके उनकी उचित आज्ञाएं न मानकर और उनको तरह - तरह के बुरे बोलों और बर्तावों से दुखी करके उनके लिए बहुत हानिकारक और दुखदाई प्रमाणित होता रहा हूं। अपनी ऐसी हालत सामने आकर मुझे अफ़सोस से भरती और दुखी करती रही है। यहां से वापिस जा कर अपने माता - पिता के संबंध में सेवाकारी होने और उनसे माफी मांगने आदि के द्वारा कुछ परिशोध करूंगा। (पिछले अधिवेशन के बाद वापिस जाकर इस नौजवान ने अपने माता - पिता से क्षमा प्रार्थना का यत्न किया)। मेरे बाबा जी अपनी उम्र के आख़िरी तीन साल में फालिज गिरने की वजह से चलने फिरने से बहुत लाचार और बेबस हो चुके थे। वह अपनी आवश्यकताएं अपने आप पूरी नही कर सकते थे। उनकी ऐसी बेबसी की हालत में मैं संगदिल और स्वार्थी उनको एक - एक दफा कहता कि मैं आपको तब उठाऊंगा, जब आप मुझे दो या तीन रुपए देंगे। चुनांचे इस तरह पर उन्हें दिक्क करके उनसे रुपए ले लेता और अपने स्वाद अनुराग की सेरी करता, जिसका कि मैं गुलाम बन चुका था। इस तरह से उनको मजबूर करके हलवाई की दुकान से लड्डू जलेबियां आदि मंगवा कर खाता। जो बुरा सलूक मैंने उनके साथ उनकी इस दुनिया में जिंदगी के आखिरी दिन में किया, वह याद आकर मुझे खास तौर पर दुखी करता रहा है, जिसका नीचे वर्णन किया जाता है : -

उस दिन जब मैं आने लगा, तब मुझे मेरे दादा जी ने आवाज़ दी की.... सिंह ज़रा मुझे उठाना। इस पर मैंने उनको उठाना तो क्या था, बल्कि गुस्से से उनको कहा कि मुझ से नहीं उठाया जाता। कभी तू मरेगा भी? और मेरी तुझ से कभी खलासी भी होगी? इस तरह पर बकता और बुड़बुड़ाता हुआ मैं स्कूल को चला गया। निहायत अफसोस कि उसी दिन उनका देहान्त हो गया। उनका देहान्त हो जाने पर मुझ चण्डाल को यही नहीं कि कोई दुःख न हुआ और अपनी उपरोक्त शर्मनाक हालत सामने तक न आई, बल्कि मैंने दिल ही दिल में खुशी महसूस की, कि उनको उठाने बिठाने और खाना आदि खिलाने से आज़ादी मिल गई। अब यह घटना सामने आती है और तीर की तरह मुझे चुभ जाती है, और मेरा दिल दुख से भर जाता है कि हाय! मैं अब इसका परिशोध किस तरह करूंगा। कृपा करके मुझे बतलाया जावे कि मैं इस पाप का परिशोध करने के लिए क्या करूं।

मैं अपने घर में सारा दिन निकम्मा रहता था और घर के पशुओं को पानी तक नहीं पिलाता था, न किसी बीमार की सेवा करता था, किन्तु यहां आकर मेरा दिल नाना प्रकार की सेवा करने के लिए भाग भाग कर जाता है और दिन में भी नाना प्रकार की सेवा करके बहुत बड़ी खुशी मिलती है।

2. भाई को भाई नज़र आने लग गया

एक जन विकासालय के सत्संग में शामिल होकर अपने भाई के नाम पर यह पत्र लिखते हैं :-

मेरे सम्मान के योग्य भ्राता जी!

आदर भाव से आपकी सेवा में नमस्कार करता हूं। आज जब मैं प्रातः काल के समय धर्म विकासालय की एक सभा में शामिल हुआ, तो आपके उपकार मेरे सामने आ रहे थे और मुझे आपके साथ कई दफा का बुरा व्यवहार याद आकर दुखी कर रहा था। प्यारे भाई जी! आप मेरे सगे भाई हैं, और हम दोनों का खून एक है। मैने जो बुरा सलूक आपके साथ किया, जब मैं उसको याद करता हूं तो मुझे बहुत शोक होता है। जब मैं छोटा सा था तब आपने मुझे कई जगह अपने पास रखा, पिता जी के गुज़र जाने पर आप ने मुझे तालीम दिला कर मैट्रिक की परीक्षा पास करवाई। मेरे लिए टयूशन रखी, आपकी ही सहायता से..... मैं नौकर हुआ था। आपने जाकर और अपने काम का हर्ज़ करके मेरी दूसरी नौकरी के सिलसिले में सहायता की, और हर प्रकार से आप मेरी बेहतरी के लिए सोचते रहे हैं, परन्तु मैं ऐसा दुष्ट हूं कि मुझे आपका ज़रा ख़्याल तक न आया, और मैं एक दफा आपको मारने के लिए दौड़ा। मैं दुष्ट आपके घर से सब ज़ेवर चोरी करके अपने सुसर के पास ले गया, और मैंने आपको बहुत दुखी किया। एक दफा भाभी जी को सख़्त चोटें पहुंचाई। एक दफा कूंडी पकड़कर आपको मारने के लिए दौड़ा। मैंने आपको बहुत सताया, और आपके साथ बहुत बुरा सलूक किया, जिससे आपके दिल पर सख़्त चोट लगी। ऐसी कुल घटनाएं अब मेरे सामने आ रही हैं, और अपनी दृष्टि में अपने आप ही शर्मसार हो रहा हूं और अपनी इन करतूतों के लिए मैं आपके चरणों में

गिरकर क्षमा प्रार्थना करता हूं। मैं कुछ दिनों के लिए धर्म विकासालय की उच्च संगत से लाभ उठाने के लिए ठहरा हुआ हूं, और यहां के उच्च असरों से मुझ में बेहतर तब्दीली आ रही है, और मैं अब श्री देव गुरु भगवान की शरण में आकर अपने आपको कई एक पापों से सुरक्षित पाता हूं, जिससे मुझे बहुत राहत मिलती है। इस विकासालय में बहुत स्वभाविक ढंग से नाना पापों से बचने के लिए शिक्षा दी जाती रही है, और मिकनातीस की न्याईं एक खास किस्म की रौशनी और ताकत अधिकारी दिलों पर असर कर रही है। यहां पर सच्ची आत्मिक विद्या का दान दिया जाता है कि जिसको पाकर मनुष्य अपने आत्मा को पहचान कर और ज़िंदगी के सफर की ऊँची - नीची चट्टानों को देख कर आने वाली ठोकरों से बच सकता है और यह जान सकता है, कि मैं कौन हूं, किस अवस्था में हूं, और इस संसार में किस मिशन के लिए आया हूं, औरों के संबंध में मेरे क्या कर्तव्य हैं, बिगड़े संबंधों में किस प्रकार से बेहतरी ला सकता हूं इत्यादि। यह शिक्षा अन्य कहलाने वाली एक या दूसरी धार्मिक शिक्षा से बिलकुल निराली है, इसके बगैर मनुष्य उन लाभों से वंचित रहता है कि जिनसे उसका मनुष्य कहलाने का अधिकार सफल हो सकता है। यदि हो सके तो आप भी ऐसी निराली संस्था से अपना संबंध स्थापन करें।

(मानवता का निर्माण)

मैं पूजनीय भगवान के चरणों में आ गया

वर्ष 1917 का शुभ महोत्सव आ गया। मैंने कुछ विशेष तैयारी की थी। देव समाज के बहुत से सेवक और श्रद्धावान लाहौर चले गए थे। मैं जितने अधिक यात्रियों को ले जा सकूँ ले जाने के लिए उत्साहित था। देवसमाज का काम बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा था। मेरा जीवन इस सीमा तक बदल चुका था कि जो मुझे भी आश्चर्यचकित कर देता था।

परंतु बहुत कम लोगों को उस समय यह अंदाजा था कि मैंने यहाँ से अपने आप को समेटने की तैयारी कर ली है और यह 1917 का महोत्सव आखिरी बार था जब मैं सिंध से महोत्सव पर जाऊँगा। अगर उन लोगों को यह पता लग जाता तो वे कम से कम परोक्ष रूप से ही मुझ पर दबाव डालते कि मैं यह कदम उठाने का विचार छोड़ दूँ क्योंकि यह सिंध में देव समाज के काम के लिए हानिकारक सिद्ध होगा। यहाँ तक कि श्रीमान भाई मोहन देव जी को भी नहीं मालूम था कि मैं इतना बड़ा कदम उठाने वाला हूँ।

वर्ष 1916 के महोत्सव के अवसर पर भगवान देवात्मा ने कृपा पूर्वक मुझसे कहा था कि प्रैक्टिस छोड़ कर पंजाब आ जाओ। एक प्रख्यात कर्मचारी को मुझे यह बताने के लिए नियुक्त किया गया था। मैं नहीं जानता था कि कैसे वह महान व्यक्ति यह मान रहे थे कि मैं तैयार नहीं था। उन्होंने कहा "तुम्हें सब कुछ छोड़ने के लिए बहुत जल्दी करने की ज़रूरत नहीं है। इससे होने वाले परिणामों के बारे में

अच्छी तरह से विचार कर लो और फिर यह बड़ी छलांग लगाओ।" मैंने सोचा वे मुझे अयोग्य मान रहे हैं। इसलिए मैंने कहा ठीक है मैं वैसे ही करूँगा जैसा आप चाहते हैं। फिर सिंध से मैंने सारा वार्तालाप भगवान को लिखकर भेज दिया।

इस प्रकार जब मैंने 1917 के महोत्सव में भाग लिया और उसके सारे कार्यक्रम समाप्त हो गए, भगवान देवात्मा ने कृपा पूर्वक मुझे अपने चरणों में बुलवाया और इस बार वे कृपा करके प्रसन्नता से मुझसे ही सामने बुला कर बात कर रहे थे। मेरी पत्नी को और मुझे बुलवाया गया था। दो या कुछ अधिक कार्यकर्ता भी वहाँ उपस्थित थे।

भगवान देवात्मा ने कृपा पूर्वक हम दोनों से पूछा कि क्या हम तैयार हैं और उनके चरणों में आना चाहते हैं? हम दोनों ने उत्साह पूर्वक कहा, जी हाँ। तब भगवान ने मुझसे पूछा मेरी आवश्यकताएँ क्या हैं? मैंने कहा भगवान मुझे तो अपनी आवश्यकताओं के लिए 10 रुपए चाहिए। बाकि सब के लिए श्रीमती सरस्वती देवी जी बताएँगी।

भगवान मुस्कुराए और उसके बाद श्रीमती सरस्वती जी के साथ सब बातें कीं, उन्होंने उनको अपनी सारी जरूरतों के विषय में बताया।

परंतु मुझे यह लिख कर देने के लिए कहा गया कि मेरा देव समाज के ऊपर किसी भी तरह का कोई दावा नहीं होगा और मैं वही स्वीकार करूँगा जो भी गुज़ारा भत्ता मेरे लिए नियत किया जाएगा तथा मेरा जीवन बिना किसी शर्त के देव समाज को समर्पित होगा। मैंने बहुत खुशी से यह सब कर दिया।

फिर मुझसे पूछा गया कि मैं कब आऊँगा। मैंने 20 जनवरी 1918 अपने पंजाब आने का दिन नियत कर लिया।

मेरे इस कदम से मेरे मित्रों, रिश्तेदारों और दूसरे जान पहचान वाले लोगों के दायरे में सचमुच एक आतंक जैसी हलचल मच गई। इससे दूसरे लोग परेशान हो रहे थे पर मैं प्रसन्नता अनुभव कर रहा था। मुझे वास्तव में ऐसे लग रहा था कि जैसे एक कैदी को रिहाई मिलने वाली है। मेरे जीवन की भावी उपयोगिता के श्रेष्ठ दृश्यों की सुंदर झलक मुझे दिखाई दे रही थी।

मैं सिंध चला गया। सिंध में मुझे कुछ मुकद्दमें पूरे करने थे या उनके लिए कुछ प्रबंध करना था। वहाँ पर एक बहुत जटिल फौजदारी मुकद्दमा था। मैं नहीं जानता था कि उसका कैसे अंत होगा। मुझे भरोसा नहीं था कि कोई दूसरा वकील उसकी जिम्मेदारी लेने के लिए मानेगा। मेरी हैरानी की कोई हद ना रही जब उस दिन शिकायतकर्ता की तरफ से कोई भी कचहरी में नहीं आया। केस के लिए तीन बार आवाज़ लगाई गई और फिर मुकद्दमा खारिज कर दिया गया। मेरे मुवक्किल को इस प्रकार आसानी से छोड़ दिया गया। मेरे बंधन टूट गए थे। बाकि मुकद्दमों ने भी आश्चर्यजनक मोड़ ले लिया। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि जैसे कोई बुद्धिमान परंतु शक्तिशाली तथा अदृश्य शक्ति इस प्रकार की घटनाओं से मेरे राह को मेरे पक्ष में मोड़ रही है मुझे जल्दी से जल्दी मुक्त करा के लाहौर के स्वर्गीय किनारों की ओर भेजने के लिए जहाँ मेरे भगवान रहते थे।

फिर भी मुझ में शक्ति नहीं थी सारे कामों को समेटने की। किंतु मेरी पत्नी ने स्थिति को अपने हाथों में ले लिया था।

मैं कचहरी गया। मैं देर शाम तक वहाँ व्यस्त रहा। जब मैं वापस आया तो मैं यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि वहाँ एक बहुत बड़ी बैलगाड़ी मेरे घर के सामान से लदी खड़ी थी पुराने सक्खर जाने के लिए।

वे मुस्कुराई और कहा जब हमने और सब रास्ते बंद कर दिए हैं अब देर करनी बहुत ग़लत होगी। अब आपको कुछ समय पुराने सक्खर में सोना पड़ेगा - हमारे सफर का पहला पड़ाव।

उनकी इस आश्चर्यजनक मदद के बिना तो मैं बहुत असहाय अनुभव करता। जिस काम को मैंने ईंट - ईंट करके बहुत मेहनत से खड़ा किया था, उसे समेटना मेरे हृदय के लिए बहुत अधिक कष्ट कारक होता।

भगवान प्राकृतिक रूप से ही व्याकुल थे कि मैं समय पर पहुँच जाऊँ और अपने वचन पर खरा उतरूं। मेरी श्रद्धेय पत्नी के कारण ही मैं अपने वचन पर सच्चा रह सका।

सिंधी लोग बहुत दुखी थे किंतु फिर भी उन्होंने मुझे हार्दिक भावपूर्ण विदाई दी।

एक फोटोग्राफर को बुलवाया गया और वह फोटो अभी भी मेरे बहुत से सिंधी साथी सेवकों के घरों में मिल जाएगी। मेरी माता जी दुख से भर कर बहुत रोई, किन्तु फिर वे मेरे साथ ही आ गईं, क्योंकि मैं ही उनका सहारा था। मेरा बड़ा भाई बुख़ारा में जा चुका था।

मेरी बहन के दुःख की भी कोई सीमा नहीं थी। मेरे साथ काम करने वाले लोग भी विरोध तो प्रकट कर रहे थे किंतु दबी आवाज़ में। मेरे गहरे और महत्त्वपूर्ण मित्रों में से एक मित्र ने मेरे एक रिश्तेदार को लिखा कि शेर हमारे इलाके को छोड़ कर चला गया है। मैं उन्हें उनकी इस सराहना के लिए धन्यवाद देता हूँ।

जब हम दोनों भगवान के चरणों में पहुँचे तो उन्होंने प्रसन्नता के साथ कृपा पूर्वक कहा कि मैं हर समय यह कामना व्यक्त करता रहा हूँ कि तुम जल्दी ही यहाँ आ जाओ, यदि तुम मेरे मिशन के लिए सहायक सिद्ध हो सकते हो तो, अन्यथा कभी नहीं। जैसे कि मुझे भोजन या ठहरने आदि के विषय में कोई आकांक्षा नहीं थी, मुझे जो कुछ भी दिया गया था मैं उसके साथ ही खुश था। मैं बस केवल यही चाहता था कि मैं भगवान के चरणों के निकट रहूँ। मेरे लिए बाकी सब कुछ कम महत्त्व रखता था।

भगवान ने मेरी सारी जिम्मेदारियों का बोझ अपने ऊपर ले लिया था। उन्होंने मेरे भोजन और कपड़े आदि के लिए पैंसठ रुपए नियत किए थे, जबकि एक वकील के रूप में वहां मैं इससे अधिक अपने नौकरों पर खर्च कर देता था। अब वह राशि मुझे ऐसे लग रही थी जैसे कि पैंसठ सोने की मोहरें हों।

मेरी पत्नी एक बहुत ही कुशल गृहणी रही है। उन्होंने इस मामले को गंभीरता से लिया। हम जानते थे कि हमें अपने जीवन के कार्यक्रम में मौलिक परिवर्तन करने पड़ेंगे। मैंने दूध लेना बंद कर दिया। हमने घी छोड़ दिया। हम दूध और घी सिर्फ हमारे दो बच्चों के लिए और मेरी माता

जी के लिए खरीदते थे। हम दोनों को अपने व्यक्तिगत खर्चे भी बहुत कम करने पड़े। हमने उन्हें घटाकर बिल्कुल कम से कम कर लिया था। हमने तब से बिना चुपड़ी रोटी खाने की आदत बना ली। आत्म संयम मेरे लिए जीवन का एक सामान्य व्यवहार हो गया था।

लाहौर में मेरी प्रसन्नता पूर्ण अवस्था (स्थिति)

जब मैं लाहौर पहुँचा और भगवान के दर्शन किए तो जिस अकथनीय प्रसन्नता से मेरा हृदय भर गया मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। मैंने अपनी इस नई-नई मिली प्रसन्नता को अपने कुछ मित्रों और रिश्तेदारों जो सिंध में थे, को लिखे कुछ पत्रों में व्यक्त किया था, जिसका कुछ सीमा तक अनुमान सारांश में इन अंशों से हो सकता है।

"जब मैंने भगवान के दर्शन किए तो मुझे अनुभव हुआ कि मैं पृथ्वी के एकमात्र सबसे पवित्रतम स्थान पर और विश्व के एकमात्र सत्य उपासना योग्य अस्तित्त्व के पास पहुँच गया हूँ। लाहौर मेरा मक्का और मदीना बन गया है और भगवान सबसे बढ़कर सच्चे स्वामी और इष्टदेव। मैं अनुभव करता हूँ कि मेरे लिए सारा संसार उसी स्थान पर ही है जहाँ उनके पवित्र चरण विचरण करते हैं। मुझे लगता है मेरी वास्तविक जन्मभूमि भी वही है जहाँ वे हैं और मेरे संबंधी भी वही लोग हैं जो उनकी अद्वितीय शरण में आ गए हैं। मेरा संम्प्रदाय देवसमाज है, मेरा धर्म देव समाज है मेरा कार्यक्षेत्र देव समाज है और मेरा केवल मात्र पेशा भी देवसमाज ही है। जिस व्यक्ति ने क्रोधित होकर कहा था कि देवसमाज तो तुम्हारे दिमाग में घर कर गई है, ठीक ही कहा था। मेरे सच्चे सम्बन्धी वही है जो भगवान के सच्चे सेवक हैं।

मुझे लगता है कि मेरे कोई पुराने स्नेह बंधन नहीं हैं क्योंकि सब पहले बंधन समाप्त हो गए है। मुझे सूखी रोटी पानी के साथ भी अधिक स्वादिष्ट और मीठी लगेगी यदि वह भगवान के चरणों में रहकर मिलेगी बजाए सिंध की सबसे स्वादिष्ट मिठाइयों और व्यंजनों के जो उनके बिना मिलें। यदि मेरे पास शरीर को ढकने के लिए केवल एक ही कमीज़ और पाज़ामा हो तो वो भी मुझे देवसमाज में रहते हुए ज्यादा अच्छा लगेगा। उनके बिना राजकुमारों जैसी कीमती पोशाकों के मुकाबलों में। भगवान के चरणों में रहते हुए एक कुली के रूप में काम करना मुझे उनकी समाज से बाहर रहकर ऊँचे अधिकारी के तौर पर शासन करने से अधिक गौरव पूर्ण लगेगा।

जब मैं सोता हूँ मुझे सुहाने और खुशी से भरे सपने आते हैं। जब मैं जगता हूँ मुझे सुंदर और अच्छे दृश्य दिखाई पड़ते हैं। सचमुच मैं अपने सबसे अच्छे हालात में हूँ।

मेरे मित्रों में से एक मेरी कुछ अभिव्यक्तियों पर क्रोधित हो गया और उसने मुझ पर व्यंग्य करते हुए भविष्यवाणी की कि जल्दी ही मुझे इस फैसले पर पछतावा होगा और जितनी उम्मीद की जा सकती है, उससे भी पहले ही।

मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि उसकी यह भविष्यवाणी गल्त साबित हुई। उस घटना को 26 वर्ष से भी अधिक समय हो चुका है और मुझे कभी एक बार भी उस कदम के लिए दुख

अनुभव नहीं हुआ। मुझे लगता है कि मेरे जीवन में मेरे सोचने से भी कहीं अधिक मूल्यवान फल प्राप्त हुए हैं। मुझे संस्थाओं का निर्माता और एक मौलिक लेखक बनने का गौरव पूर्ण विशेषाधिकार प्राप्त हुआ है।

भगवान देवात्मा ने मेरे लिए कई सपने देखे थे, उनमें से एक यह था कि मुझे लेखक बनना चाहिए।

यह वर्ष 1915 की बात है जब श्रीमान पण्डित हर नारायण जी अग्निहोत्री ने मुझे भगवान के जीवन के कुछ व्यक्तिगत संस्मरण भेजने के लिए कहा था। मैंने उन्हें एक किश्त भेजी। मैं बिल्कुल भी यह नहीं जानता था कि मैंने समान्य से हटकर कुछ किया है। भगवान के कहने पर सेक्रेटरी महोदय के द्वारा भेजे गए एक कार्ड से यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि जिन घटनाओं का वर्णन किया है और भेजी हैं वह अपने आप में अनोखी हैं और इससे पहले भगवान का कोई भी सेवक कभी इस रूप में और इतने प्रभावशाली ढंग से नहीं लिख पाया है।

मुझे और अधिक लिखने के लिए उत्साहित किया गया। फिर मैं और भी अधिक से अधिक लिखने के लिए प्रेरित होकर लग गया। वे सारे संस्मरण एक साथ प्रकाशित हुए और उन्होंने बहुत बड़ा प्रभाव डाला। उनको कोई 1915 के देवात्मा नंबर में पढ़ सकता है और साइंस ग्राउंडिड रिलीजन के 1916 के कुछ अंकों में भी। श्रीमान पंडित हरनारायण जी ने बहुत सी सभाएँ उनमें वर्णित व्यक्तिगत संस्मरणों को ही आधार बनाकर करवाई हैं।

श्रीमान मास्टर मुकुन्द सिंह जी के जीवन-तत्व अखबार के लिए इनका अनुवाद करना आरंभ कर दिया। इन सारी घटनाओं का उर्दू रूपांतरण भी तब के हमारे साप्ताहिक जीवन तत्व में छापा गया था।

इन सारी घटनाओं को स्वयं भगवान द्वारा उचित संशोधन किए जाने के बाद प्रकाशित किया गया है। इसलिए इन पर तो प्रमाणिकता की मोहर लगी हुई है।

जब मैं लाहौर आया तब भी मैंने ऐसी घटनाओं को संकलित करना जारी रखा। एक नया पक्ष और मैंने इसमें जोड़ दिया। वह था भगवान देवात्मा के कथन उन घटनाओं के साथ-साथ। तब ये कथन पूरी तरह से भगवान द्वारा जांच व संशोधन के बाद ही 'साइंस ग्राउंडिड रिलीजन' में छापे गए थे।

परंतु जैसे कि भगवान के पास मेरे ऐसे सभी वर्णनों को देखने का समय नहीं होता था तो मैंने कुछ तो और लिखे और फिर रुक गया। वह दर्जनों लिखे हुए संस्मरण 'साइंस ग्राउंडिड रिलीजन' में भगवान के देवलोक गमन के बाद प्रकाशित हुए।

साहित्य लेखन के इस पक्ष को मैं अपने जीवन की एक सफल उपलब्धि के रूप में अनुभव करता हूँ। यह वितरण आगे आने वाले लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का चिरस्थायी स्रोत सिद्ध होंगे।

एक आश्चर्यजनक घटना जो 1918 में हुई और जो मेरे लिए बेहिसाब मददगार साबित हुई वह यह थी कि धर्म विकासालय लाहौर में आ

गया था और श्रीमान पंडित हर नारायण जी उसके प्रिंसीपल बनाए गए थे। वे केवल एक साल के लिए ही प्रिंसीपल रहे परन्तु उस साल ने मुझे भगवान के दर्शन की बुनियादी सच्चाईयों को समझने के योग्य बना दिया।

जिससे मेरा दृढ़ व सुरक्षित आधार तैयार हो गया था। मैं यह समझ गया था कि भगवान का देवरुप वास्तव में क्या है। इसके अलावा कुछ और भी शंकाए या समस्याएं थी जिनको उन्होंने हल किया और इस सब ने मुझे देवसमाज की विज्ञान पर आधारित शिक्षाओं के बुनियादी सिद्धांतों के विषय में ठोस प्रशिक्षण दिया।

यदि वे प्रिंसीपल ना रहे होते और विकासालय लाहौर में स्थानांतरित होकर ना आया होता तो मैंने जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण अवसर खो दिया होता। इसने ही देव समाज में किसी महत्त्वपूर्ण लेखक के रूप में मेरे भविष्य की नींव डाली।

इस तरह से मैंने पंजाब में अपने काम की शुरूआत इन्हीं भावनाओं के साथ, जिनका मैंने ऊपर वर्णन किया है और भगवान की अद्वितीय शिक्षाओं के प्रशिक्षण जो मैंने पंडित श्री हर नारायण जी अग्निहोत्री के चरणों में प्राप्त किया था, के साथ की।

सिंध में और पंजाब में भी बहुत से लोगों को मेरे भविष्य के विषय में डर था। कुछ लोगों ने व्यक्त किया था कि मैं जल्दी अपने पेशे में वापिस चला जाऊँगा क्योंकि एक कार्यकर्ता के रूप में सादगी भरा जीवन और भगवान के अधीन जीवन मुझे थका देगा। मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि ऐसे लोग अपने डरों को झूठा साबित होते देखने के लिए जीवित रहे और उन्होंने यह सब अपने पत्रों में अभिव्यक्त भी किया।

- पी.वी.कनल

देव वाणी

देव जीवन को प्राप्त होकर मैं विश्व के प्रत्येक विभाग के साथ अपना जीवन्त संबंध अनुभव करता हूँ। मैं विश्व के नाना प्रकार के जीवित और अजीवित अस्तित्वों के साथ अपने आपको विविध उच्च भावों के द्वारा बंधा हुआ पाता हूँ। यदि मैं देखता हूँ, कि किसी जीवित अस्तित्त्व वा अजीवित पदार्थ को कोई अनुचित हानि पहुँच रही हैं, तो मैं उस अस्तित्त्व वा पदार्थ के साथ जुड़ा हुआ अनुभव करने के कारण उसकी इस हानि से अपने हृदय में आघात लाभ करता हूँ। यदि मेरी पत्नी वा मेरा कोई बच्चा वा अन्य पारिवारिक जन वा मेरा कोई सेवक वा श्रद्धालु वा कोई और जन, किसी अन्य जन वा पशु वा पौधे वा किसी निर्जीव पदार्थ के संबंध में कोई अनुचित क्रिया करे, तो उसके देखने वा पता लगने पर मुझ तक उसकी क्रिया का आघात पहुंचता है, और मैं उससे क्लेश पाता हूँ। यदि कोई अन्य जन या जीव मेरे उपरोक्त नाना प्रकार के संबंधियों के संबंध में कोई अनुचित क्रिया करे तो उसका भी मेरे हृदय पर आघात लगता है। यदि मैं अपने वा किसी और के घर की दीवारों, खिड़कियों, छतों, मोरियों, उसके फ़र्श, दरवाज़ों,

परनालों और शीशों आदि को मैला, टूटा, बदसूरत, मकड़ी के जालों से भरा हुआ वा किसी रास्ते में गढ़े वा उसे धूलि से पूर्ण और गोबर वा लीद वा घास फूस आदि से मैला देखता हूँ, तो मुझ पर उसका क्लेशदायक असर पड़ता है। यदि मैं अपने वा किसी और के कपड़ों, बर्तनों, लैम्पों, पुस्तकों, तस्वीरों, संदूकों, जूतों वा अपनी वा किसी और की किसी मेज़ चौकी और किसी अजीवित वस्तु को मैले और कदाकार रूप में देखता हूँ, तो उससे मुझे क्लेश होता है। यदि मैं अपनी वा किसी की वस्तुओं को बे ठिकाने और विश्रृंखला की हालत में देखता हूँ, तो उससे भी मुझे कष्ट होता है।

यदि मैं देखता हूँ, कि किसी जीवित पौधे को (जिसे पानी मिलना चाहिए था) पानी नहीं मिला, और उससे वह सूख रहा है, तो मुझे उसकी इस हानि को देखकर तकलीफ़ होती है। यदि मैं देखता हूँ, कि मेरा एक पारिवारिक जन दूसरे पारिवारिक जन के प्रति अथवा कोई सेवक किसी अन्य सेवक के प्रति उचित सम्मान प्रदर्शन नहीं करता, वा उसके किसी दुख दर्द की ओर ध्यान नहीं देता, अथवा उसके प्रति कोई और उचित वा न्याय मूलक व्यवहार नहीं करता, तो उसका आघात मुझ तक पहुंचता है, और मैं दुखी होता हूं। यदि मैं देखता हूँ, कि मेरे अथवा मेरे किसी पारिवारिक वा सामाजिक जन के संबंध में कोई अपनी उचित प्रतिज्ञा भंग करता है, तो मुझे उससे कष्ट पहुंचता है। यदि मैं देखता हूँ, कि मेरे वा किसी अन्य के संबंध में कोई जन कृतघ्न बनता है, तो उससे मुझे बहुत दुख होता है। यदि मैं देखता हूँ, कि कोई जन किसी अन्य जन वा पशु को कोई अनुचित दुख वा किसी पौधे वा वृक्ष को अनुचित हानि पहुंचाता है, तो उससे मेरे दिल में सख्त चोट लगती है। यदि मैं देखता हूँ कि कोई जन मेरे वा किसी अन्य के संबंध में अपना कोई आवश्यक कर्तव्य कर्म ठीक समय में और भलीभांत पूरा नहीं करता, तो मुझे उससे बहुत क्लेश मिलता है। यदि मैं देखता हूँ, कि कोई जन मेरे वा किसी अन्य जन के प्रति कोई अत्याचार करता है, तो मुझे उससे बहुत दुख होता है। यदि मैं देखता हूं, कि मेरा कोई संबंधी योग्यता रखने पर भी एक वा दूसरे कारण से अपने जीवन को उन्नत नहीं करता वा नहीं करना चाहता, तब मुझे उससे कलेश पहुंचता हैं। यदि मैं देखता हूँ कि कोई जन अपने आत्मिक जीवन वा किसी और के विषय में किसी प्रकार का मिथ्या विश्वास रखता है, वा किसी मिथ्या मत वा विश्वास का प्रचार करता है, वा मिथ्या का साथी बन कर किसी संबंध में कपटाचारी वा हानिकारक बनता है, तो उससे मुझे बहुत आघात पहुंचता है। यदि मैं देखता हूं, कि किसी के संबंध में कोई द्वेष भाव रखकर उसे कोई अनुचित हानि पहुंचाने की चेष्टा करता है, तो उससे मैं व्यथित होता हूं। यदि मैं देखता हूँ, कि कोई अपने धन का अपव्यय वा किसी वस्तु का अनुचित व्यवहार करता है, तो उससे मुझे तकलीफ़ पहुंचती है। यदि मैं देखता हूँ कि असंयम द्वारा कोई जन अपने शारीरिक स्वास्थ्य को हानि पहुंचा रहा है, तो मुझे उसकी ऐसी क्रिया क्लेशदायक मालूम होती है। इत्यादि इत्यादि ।

पति पत्नी यज्ञ साधन

धन्य हैं परम पूजनीय भगवान देवात्मा, जिन्होंने सम्बन्धों की उच्च शिक्षा देकर घरों को स्वर्ग बनाया है। आजकल पति पत्नी के विषय में दिन चल रहे हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा एक आदर्श पति थे। दूसरी माता पूजनीय जी की लम्बी बीमारी में जिस प्रकार अपने हाथों से उनकी सेवा की, वह कथा पढ़ने योग्य है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के हृदय में स्त्री जाति के लिए अथाह हमदर्दी थी। जब कोई पति अपनी पत्नी पर ज़ुल्म करता, उसका निरादर करता, तो उनसे सहन नहीं होता था। इसलिए अहंकारी वा स्वार्थी पति जो भी उनके प्रभावों में आए उन्हें अपने अपराधों वा दुर्व्यवहारों पर पश्चाताप हुआ। अनेकों पतियों ने अपनी पत्नियों के पैरों में गिर कर क्षमा मांगी और कई पत्नियों ने अपने बुरे व्यवहारों के लिए पश्चाताप किया और उनके आपसी सम्बन्ध हितकर बन गए।

पति पत्नी का सम्बन्ध कोई खून का रिश्ता नहीं होता, परन्तु उससे भी बढ़ जाता है, क्योंकि एक लड़की अपने मायके से ज़्यादा समय ससुराल में गुजारती है। एक नन्हा पौधा एक जड़ से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लग जाता है, जिसे ससुराल कहते हैं, इसलिए उसे पनपने में समय लगता है। एक दम कितने सारे नये रिश्ते बन जाते हैं, जिनको सम्भालने में उसे बड़ी कठिनाईयों में से गुज़रना पड़ता है, यदि पति का साथ मिले तो वह हर कठिनाई को पार कर लेती है। यदि दोनों समझदारी से काम लें तो धीरे 2 वह पौधा जड़ पकड़ लेता है, फिर इतना मजबूत हो जाता है कि किसी सम्बन्धी, या किसी कहलाने वाले हितकारी के झांसे में नहीं आता। इसमें सब्र और सहनशीलता की आवश्यकता होती है।

मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यवान समझती हूँ कि मुझे पति के रूप मुझे समझने वाले पति मिले हैं। यह नहीं कि उनसे किसी व्यवहार से कभी मुझे तकलीफ नहीं हुई, आखिर हम इन्सान हैं, परन्तु मैंने उनके इस व्यवहार के साथ 2 उनके उस रूप को देखा है, जो मेरे लिए सम्मानीय रहा है।

मैं भी देव समाज परिवार से सम्बन्धित थी, विकासालय में शिक्षा प्राप्त की थी, गुरू का कारज मुझे प्यारा लगता था, और गुरू के कारज में इनकी लगन, तपस्या, कठिनाईयां उठाना, प्रचार के लिए घर से बाहर रहना कभी नहीं खटका, उल्टा मेरा इनके प्रति सम्मान बढ़ता गया, क्योंकि मैं ऐसे कष्टों में से नही निकल सकती थी। उस वक़्त कोई सफर के सुविधाजनक साधन नहीं थे, समान उठाना पड़ता, पैदल चलना पड़ता, कभी बारिश में भी चलना पड़ता, खाने का भी कभी सही प्रबन्ध नहीं होता था, माननीय श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी कभी 2 इन्हें बड़े कड़े शब्दों में समझाते, परन्तु इन्होंने न केवल बुरा नहीं माना बल्कि उन्हें अपना बहुत बड़ा हितकारी समझा। गुरू के काम का जनून, पापियों को बदलने की तड़प जो मैंने इनमें देखी, वह वर्तमान में कहीं नज़र नहीं आई। श्रीमान किशन सिंह जी चौहान जी के गाँव में जाने के लिए बहुत कठिन मार्ग था, परन्तु पता नहीं कितनी बार गए, पंजाब के बहुत से गाँवों में जाते रहे। ऐलनाबाद के पास एक गाँव था, जहाँ

से ओम प्रकाश जी तलवाड़ा में आश्चर्यजनक तबदीली आई थी। वहां कितनी बार गए। अपने रहने, सहने खाने के बोधों की कभी प्रवाह नहीं की। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी और श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के शानदार उदाहरणों से सदा प्रभावित रहे।

समाज के शानदार भवन बनाए, प्रचार केन्द्र खोले, धन बढ़ाने के साधन बनाए। परन्तु हम जानते है कि मनुष्य प्रकृति कैसी होती है, इनको किस 2 प्रकार की विरोधताओं का सामना करना पड़ा, वह मैं ही जानती हूँ। जो इन जैसा काम नहीं कर सकते थे उन्होंने अपनी लकीर बढ़ाने के स्थान पर इनकी लकीर छोटी करने की कोशिश की, परन्तु उनकी गुरू के प्रति अथाह लगन में कोई विरोधता आड़े नहीं आई। अब इस उम्र में भी विरोधी खड़े हो गए हैं, जो इनके प्रति श्रद्धा का प्रदर्शन करते थे, अब वह कहां पहुँच गए हैं, परन्तु अब भी यह इस सब की परवाह न करके उनके शुभ की कामना करते हैं कि उनका भला हो।

इस समय न ऐसे साधक हैं, न प्रचारक इसलिए ऐसे पति से सम्बन्धित होकर मैं गर्व से भर जाती हूँ। मेरी शारीरिक, मान्सिक और हार्दिक उन्नति के लिए सदा संग्राम करते रहे हैं। मुझे M.A. करवाया, मुझे गुरू महाराज रचित पुस्तकों की परीक्षा दिलवाई, उसमें फस्ट रहने पर मुझे बहुत कीमती उपहार दिया, जबकि आजतक मैंने कभी किसी चीज़ की demand नहीं की थी। यह बिलकुल पक्षपात रहित रहे हैं। मेरे अपने ससुराल के सब रिश्तेदारों से बहुत अच्छे सम्बन्ध रहे हैं, उन्होंने भी मुझे भरपूर प्यार और सत्कार दिया है, परन्तु जब कभी उनकी तरफ से मेरे सम्मान में इशारा तक भी मिला है, इन्होंने stand लिया है। और भी हमारे ऐसे हितकारी होते हैं, जो पति पत्नी के सम्बन्ध को बिगाड़ने का यत्न करते हैं, परन्तु मुझे यह कहकर तसल्ली दे देते थे कि मेरे से ज़्यादा आपको कौन जान सकता है, दूसरों की ग़ल्तफहमियों को हम दूर नहीं कर सकते। मेरे लिए यही काफी था।

अब हम ज़िन्दगी के उस पड़ाव पर पहुँच चुके हैं, जहां हम पति पत्नी से ज़्यादा दोस्त हैं। उनकी लम्बी उम्र के लिए हम मिलजुल कर यत्न करते हैं और वह धन्यवाद देते नहीं थकते। अब यह रिश्ता और भी मधुर और सुखदायक हो गया है। ज़्यादातर मैंने इस उम्र में बूढ़ों को लड़ते देखा है, परन्तु परम पूजनीय भगवान की कृपा से हम स्वर्गीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। धन्य हैं मेरे गुरू, शत: शत: प्रणाम है उनके अद्वितीय रूप को और अद्वितीय शिक्षा को।

एक सौभाग्यवान पत्नी
- सुरजीत बराड़

केसूपुर स्कूल में माता पिता दिवस

आपको यह जानकर खुशी होगी श्री विवेकानन्द सीनियर सैंकण्डरी स्कूल जिसमें श्री सरताज सिंह जी बहुत वर्ष प्रिंसीपल रहे हैं, अब सरकारी नौकरी में चले गए है, उनकी स्कूल में पार्टनरशिप भी है, उस स्कूल में (डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों ने उन्हें प्रेरित किया) इस वर्ष 15 फरवरी को माता पिता दिवस बहुत शानदार ढंग से मनाया गया। इसके लिए स्कूल स्टाफ और मैनेजमैंट

ने खूब जोश से तैयारी करवाई। कुछ Material मिसिज़ सुरजीत बराड़ जी ने उनको भेजा जो एक छोटा सा नाटक था। जिसका हैडिंग था, माता - पिता का बिल"।

14 फरवरी को मिसिज़ सुरजीत जी भी वहां पहुँच गई। उनकी रिहरसल देखी और मन्दिर में जो काम हो रहा है, उसमें अपनी योग्यता अनुसार कुछ सुझाव दिए। 15 तारीख को 10.30 बजे प्रोग्राम शुरू हुआ, जिस में करतार सिंह जी प्रिंसीपल और श्री महिन्द्र मेहता B.Ed. ऐलनाबाद चीफ गैस्ट थे। प्रोग्राम में माता पिता के सम्बन्ध में कई नाटक, बच्चों के dance, गिद्दा, भंगड़ा आदि पेश किए गए। सब आईटम एक से एक बढ़कर थे बहुत बड़ा हाल सजाया हुआ था। 800 - 900 के करीब हाज़री थी। माता पिता प्रोग्रामों को देखकर प्रभावित थे और 500 - 1000 रुपये कम से कम 50 - 60 आदमियों ने दिए। वहां का सारा अनुशासन, सद्भाव, स्टाफ की मेहनत देखकर सामाजिक जन भी बहुत प्रभावित हुए। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, मिसिज़ बराड़, सतिन्द्र ढिल्लों और Chief guest ने items के बीच बीच में 4 - 5 मिन्ट बोलकर बच्चों को और स्टाफ को उत्साहित किया। लगभग सारे सेवक वहां वर्तमान थे। खुशी की बात है कि श्रीमान अजीत सिंह जी के घुटनों का आप्रेशन सफल रहा और अब वह पूरी तरह आराम से चल फिर सकते हैं।

सारा प्रोग्राम उत्साहवर्द्धक था। स्कूल में मिसिज़ बराड़ द्वारा लिखित 'नेक जीवन की राहें' नामक पुस्तक दी गई और प्रिंसीपल साहिब को बेनती की गई कि वह स्कूल में नीति करवाया करें। उनके स्कूल के परिणाम बहुत शानदार हैं। अभी 2 उनके स्कूल की पढ़ी हुई लड़की मैजस्ट्रेट बनी है। पढ़ाई और अच्छे संस्कार देने में स्कूल पूरा यत्न करता दिखाई देता है।

चण्ड़ीगढ़ से गोपाल कृष्ण जी भी पहुँचे। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने वहां एक दिन ठहरकर 2 सभाएं करवाई।

- एक हाज़रीन

निज के साधन में

देव वाणी में गुरू महाराज की व्याकुलता के बारे में पढ़कर आज साधन में एक नई प्रेरणा मिली। मुझमें यह दर्द जागा कि हमारे उपकारी और हितकारी जन हमारे भले को लेकर हमारे फायदे को लेकर तड़पते रहते हैं, और उनकी कुछ पेश नहीं जाती.....

हमारे बहुत से हिताकांक्षियों की तड़प उनके हमारे प्रति हित भाव की मात्रा के अनुसार बहुत गहरी भी होती है। वह हमारी दयनीय हालत देखकर, हमारा अहित होता हुआ अथवा हमें डूबता हुआ देखकर दु:खी हुए है, तड़पे हैं और अब भी तड़पते होंगे, परन्तु हम अपने इर्द - गिर्द स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता, घमण्ड आदि का भरपूर सामान इकट्ठा करके उसमें ही घिरे रहते हैं। उसी में प्रसन्नचित और मस्त रहते हैं। अत: हमारे भले के लिए रोने वाले चाहकर भी हमारा कुछ संवार नहीं सकते। हम अपने आप में ही खास वजूद बने रहते हैं और अपने हिताकांक्षियों को हम अपने नजदीक तक आने नहीं देते क्योंकि हमने अपनी एक अलग व मजबूत दुनियाँ

बना रखी होती है।

काश! मेरा अन्धेरा कुछ छंट सके। अपने हित की मुझमें समझ पैदा हो सके। अपना हितकारी हितकारी ही दिखाई दे सके। इस पक्ष में मेरी नीचता घटे, मेरा घमण्ड कुछ दूर हो। तभी सामने वाले की महिमा और उसका अपने प्रति हितकारी भाव, अपनी दयनीय हालत व सामने वाले का कृपालु रूप मेरे सामने कुछ चमक सकेगा।

काश! मेरा भला हो सके।

गुरूदर का तुच्छ सेवक
गोपाल कृष्ण

गहरी व्याकुलता से उठे सवाल

इस प्रकार के सवाल पहले भी कई जनों के उतार - चढ़ाव, समाज में बिखराव टूट - फूट, पक्षपात वा एक दूसरे में पनपी दूरियों को देखकर पैदा हुए हैं, जब कई अनुभवी व पुराने सेवक, प्रचारक कर्मचारी भी यह कहते सुने जाते हैं कि मुझे तो सिर्फ शिक्षा से मतलब है, हमें तो सिर्फ गुरू की तरफ देखना है और सिर्फ गुरू से जुड़ना है आदि - आदि। हमें किसी सेवक किसी कर्मचारी के साथ नहीं जुड़ना.....

यह जो इतनी बड़ी बात कि हमें गुरू का बनना है, न कि किसी साथी प्रचारक अथवा कर्मचारी का, इसमें हमें अपनी जाँच करनी चाहिए कि हमारे इस प्रकार के भाव में कहीं :-

प्रश्न :- यह हमारी मनमर्जी अथवा स्वेच्छाचारिता तो नहीं बुलवा रही?

प्रश्न :- कहीं हमारे सुखों पर चोट लगी हो और उसकी पीड़ा हमसे ऐसा बुलवा रही हो?

प्रश्न :- क्या इसमें हमारी सच्ची श्रद्धा, सम्मान, शुक्रगुज़ारी के भावों में बढ़ोतरी हुई है यानि वह पहले से बढ़े हैं अथवा

प्रश्न :- हमारी रक्षा और विकास में पहले से बेहतरी आयी है या हम पीछे की ओर जा रहे हैं?

प्रश्न :- क्या परोपकार का भाव बढ़ रहा है...., या स्वार्थ/अपनत्व व घमण्ड बढ़ रहा है?

प्रश्न :- क्या बाहर से परोपकार की कुछ गतियाँ करके भी हमारे अन्दर से भला बनने के संकेत हैं? जैसे नम्रता व दीनता आदि सद्गुण बढ़े है?

प्रश्न :- क्या ऊपर चढ़ने (गुरू से जुड़ने व गुरू का बने रहने) के लिए सीढ़ी के सब पायदान साथ हैं व मजबूत हैं अथवा वह छोड़ दिए हैं या तोड़ दिए हैं?

प्रश्न :- कहीं हमारा ध्यान ऊपर की ओर तो हो (अपनी समझ के अनुसार) बड़े लक्ष्य की ओर तो हो और सीढ़ी के निचले पायदानों की ओर हमारा ध्यान ही न हो यानि वह कर्त्तव्य हम भूल चुके हों व छोड़ ही चुके हों जिनसे होकर ही हमारा ऊपर तक पहुँचना सम्भव होता है?

श्री देव गुरू भगवान ने हम मनुष्यात्माओं की हालत देखकर एक जगह बहुत गहरी व्याकुलता के साथ फरमाया है कि "एक - एक जन ऐसा है जिसमें अहं अनुराग कूट - कूटकर भरा हुआ है उसके खिलाफ अगर हम कुछ कहें तो झट घृणा करने लग जाता है..... और कोई भलाई का काम नहीं करना चाहता.... मिलकर यह सोचने की आवश्यकता हैं कि काम के आदमी किस तरह बनें।"

गुरू के प्रभावो की मुख्य बात कि क्या हमारा देवात्मा के प्रभावों को मिलने का सिलसिला चलता है या नहीं.....?

- गोपाल कृष्ण

सामाजिक समाचार

संगरूर में विशेष सत्संग

देव समाज मंदिर संगरूर में 10, 11, 12 फरवरी 2023 ई. को विशेष सत्संग मनाया गया। यह सत्संग डॉ. नवजोत जी ने अपने श्रद्धेय पिता जी की याद में हर वर्ष की तरह रखा था। जिसमें शामिल होने के लिए चंडीगढ़, बठिंडा, गंगानगर, पदमपुर, गजसिंह पुर, मल्लेंका, केसुपुर, गोनियाना, कल्याण आदि स्थानों से लगभग 25 धर्म संबंधी पधारे, लोकल हाजरीन भी अच्छी संख्या में शामिल हुए। विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी भी आख़री दिन पधारे और उनके दर्शन करके धर्म संबंधी बहुत खुश हुए। सभाएं श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, प्रिंसीपल श्रीमती सुरजीत बराड़ जी, श्रीमान गौतम जी ने करवाई। भजन श्रीमान गुरदेव राज जी और श्रीमान गौतम जी ने गाए।

10 फरवरी, 2023, प्रवेश सभा, रात 8.00 बजे। सभापति : श्रीमान गौतम जी गोनियाना। सबसे पहले श्रीमान गुरदेव राज जी ने 'हमारे पूजनीय सतगुरू जी तुम हो धन्य' भजन का गान किया। फिर सभापति जी ने बताया कि नेचर के नियमों का राज हैं, एक नियम विकास का नियम है, इस नियम से नए नए अस्तित्त्व और विचार पैदा होते हैं, देव समाज भी विकास क्रम में पैदा हुई है। इसने धर्म की विज्ञानमूलक शिक्षा दी है, धर्म अच्छे बनने का नाम है, धर्म इमानदार, पवित्र बनने का नाम है, श्रद्धा, कृतज्ञता, परोपकार के बिना कोई धर्म नहीं होता, इन उच्च भावों को विस्तार पूर्वक बताया गया। कुछ उदारहण प्रस्तुत किए गए। फिर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने श्रीमान सीता राम जी के गुणों और उनके जीवन में आए शुभ परिवर्तन का ब्यान किया।

11 फरवरी, 2023, पहली सभा, सुबह 9.30 बजे। सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने फरमाया कि विभिन्न धर्मों में मोक्ष की भिन्न भिन्न धारणाएं हैं। फिर सभापति जी ने उपस्थित हाजरीन से उच्च भावों के नाम पूछे, ईमानदारी और पवित्रता के भावों की व्याख्या की। श्रद्धा, कृतज्ञता, हानि परिशोध, दया आदि भावों को बताया। सभापति जी ने इन भावों की व्याख्या करते हुए कहा कि इन भावों से भी मनुष्य की हानि हो सकती है यह उच्च भाव भी कई बार हमें ग़ल्त फैसले करने को मजबूर कर देते हैं। फिर सभापति जी ने सर्व उच्च भावों :

1- देवात्मा के देव रूप के लिए अटल विश्वास,
2 - देवात्मा के देवरूप के लिए अटल श्रद्धा
3 - देवात्मा के लिए अटल कृतज्ञता
4 - देवात्मा के देव प्रभावों के लिए आकर्षण भावों की व्याख्या की। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी।

दूसरी सभा, रात 8.00 बजे। सभापति प्रिंसिपल श्रीमती सुरजीत बराड़ जी। सभापति प्रिंसिपल श्रीमति सुरजीत बराड़ जी ने फरमाया कि इंसान के बनने और बिगड़ने के दो फैक्टर हैं, उनमें से एक पूंजी है और दूसरा वातावरण। पूंजी को हम बदल नहीं सकते पर वातावरण को हम बदल सकते हैं। नीच वातावरण के कुछ बुरे परिणामों के कुछ उदाहरण पेश किए। फिर उन्होंने भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से परिवर्तित कुछ पटवारियों के उदाहरण पेश किए । यह महकमा कितना बदनाम है। एक पटवारी ने स्वयं लिखा था कि यदि पटवारी न होते तो शैतान बेऔलाद ही मर जाता। परम पूजनीय भगवान के देव प्रभावों की संगत ने एक 2 रिश्वत खोर, नशई, मांसाहारी, व्यभिचारी, मिथ्याचारी, पटवारी को बदल कर न केवल ईमानदार बनाया, बल्कि उनसे पहले ली हुई रिश्वतें वापिस करवाई। पाप और मिथ्या से निकाला। इन उदाहरणों

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

के द्वारा भगवान देवात्मा की महिमा का वर्णन किया। यह सभा बहुत सरल ढंग से पूजनीय भगवान की महिमा को दर्शा रही थी। फिर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कुछ बयान किया

12 फरवरी 2023, पहली सभा, सुबह 9.30 बजे। सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने फरमाया कि यह देवसमाज के त्यौहारों में से यह तीसरा त्यौहार है। देव समाज विज्ञानमूल धर्म है। बाकी धर्मों में भिन्न भिन्न प्रकार की गप्पे हैं। जब तक उच्च परिवर्तन नहीं आता उतनी देर धर्म नहीं आता। श्रीमान जी ने ईर्षा की घटनाएं बताई। सभापति जी ने सभा में वर्तमान संतानों से अपने माता पिता को प्रणाम करने को कहा।

भाव प्रकाश

माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी: श्रीमान जी ने फरमाया कि आते समय रास्ते में वो इस भजन को गाते रहे 'धन्य हैं देवगुरू भगवान'। श्रीमान जी ने डॉ नवजोत जी और उनके परिवार को धन्यवाद कहा। उन्होंने फरमाया कि धर्म संबंधियों के दर्शन करके उन्हें बहुत खुशी हुई है। श्रीमान जी ने श्रीमान गोपाल जी के कई गुणों का वर्णन किया।

श्रीमान जागीर सिंह जी : यहां हमारी बहुत सेवा हुई है। पहली बार जब सभा हुई मुझे देव समाज की समझ नहीं आई, क्योंकि यहां कोई ईश्वर की बात नहीं होती। पर मुझे धीरे धीरे अपनी गलतियां नजर आने लगीं। आज भजन से भी रोशनी मिली। मैं तन मन से अपने गुरू महाराज के मिशन में सेवा करूंगा।

श्रीमान हरदेव सिंह जी : मैं नीच असरों में रहता था, श्रीमान जी ने मुझे किसी बात पर टोका मेरे अंदर नीच घृणा पैदा हो गई, उन्होंने श्रीमान जी से माफी मांगी। नीचता से अब काफी राहत मिल रही है और कुछ कुछ पवित्रता आ रही है।

श्रीमान मधु सूदन जी : मैं अब से पवित्र बनना शुरू करूंगा। सेवा करूंगा। धर्म पत्नी जी के मोह से निकलने की कोशिश करूंगा।

श्रीमान गोपाल जी : हमारे घर के देव समाज में आने से पहले नर्क था, मैं बहुत सारे धर्मों में फिरता रहा पर संबंधों में वही नरक रहा। यहां आकर ही अपने अंदर का रूप नज़र आता है।

श्रीमान दूनी चन्द जी ने अपने पोते का धन्यवाद किया कि उन्होंने उनको देव समाज के साथ जोड़ा।

यह सत्संग बहुत हितकर रहा। धर्म सम्बन्धी बहुत उत्साह से भरे हुए थे।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts